(1)

Lecture :- 108

Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept of Commerce
Sub:- MONEY AND BANKING
Subsidiary paper
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA

B. Com Part IInd

* Introduction

** MEANING OF DIS-INFLATION **
(मुद्रा- अपस्फीति का आशय)

जब देश में मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो उसे सामान्य स्तर पर लाने के लिए मुद्रा की मात्रा में क्रमशः कमी की जाती है। इस प्रक्रिया को ही मुद्रा- अपस्फीति कहते है। मुद्रा- अपस्फीति व्यावहारिक रूप में मुद्रा-संकुचन की भाँति ही है और इसको कार्यान्वित करने के लिए प्रायः वही रीतियाँ उपयोग में लायी जाती हैं। दोनों का उद्देश्य वस्तुओं के मूल्यों और मुद्रा की मात्रा में कमी करना होता है परंतु संकुचन में मुद्रा की मात्रा आवश्यकता से भी कम कर दी जाती है जबकि अपस्फीति में मुद्रा की मात्रा को एक असामान्य ऊँचे स्तर (Extra-Ordinarily high level) से कम कर धीरे-धीरे सामान्य स्तर पर लाने की चेष्टा की जाती है। कॉलबोर्न के अनुसार, "कीमतों, आय और व्यय में जो भी गिरावट लाभकारी होगी, वह अपस्फीति कहलाएगी।"

मुद्रा- अपस्फीति तथा मुद्रा- संकुचन में अंतर (Distinction Between Disinflation and Deflation)

मुद्रा- अपस्फीति तथा मुद्रा- संकुचन में निम्नलिखित अंतर है :-

i) उद्देश्य (Objective) - मुद्रा- संकुचन का प्रभाव देश में मंदी की स्थिति उत्पन्न कर देता है जबकि मुद्रा- अपस्फीति मूल्य स्तर को सामान्य अवस्था में लाने के लिए की जाती है।

ii) स्वाभाविक अथवा योजनाबद्ध (Natural or Planned) - मुद्रा- संकुचन प्रायः स्वयं परिस्थिति वश हो जाता है।

जबकि मुद्रा-अपस्फीति एक निश्चित नीति के अनुसार की जाती है और सरकार तथा केन्द्रीय बैंक इसके लिए सक्रिय कदम उठाते हैं।

iii) मुद्रा की मात्रा (Quantity of Money) - मुद्रा अपस्फीति में मुद्रा की मात्रा को बढ़ाकर सामान्य स्तर तक लाया जाता है जबकि मुद्रा-संकुचन में मुद्रा की मात्रा सामान्य स्तर से गिरकर बहुत नीचे चली जाती है।

iv) परिणाम (Consequences) - मुद्रा-अपस्फीति के फलस्वरूप देश में सामान्य स्थिति निर्मित हो जाती है जबकि मुद्रा-संकुचन के परिणामस्वरूप मन्दी का वातावरण उत्पन्न हो जाता है, व्यवसाय और कारखाने बंद होने लगते हैं और अनेक व्यक्ति रोजगार से हाथ धो बैठते हैं।

संक्षेप में, मुद्रा-अपस्फीति देश की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए होती है जबकि मुद्रा-संकुचन से देश को हानि होती है।

मुद्रा-अपस्फीति के उपाय :-

i) सरकार ऋणपत्र बेचकर अथवा नए-नए कर लगाकर चलन से अधिक मुद्रा वापस खींचने का प्रयत्न करती है। ii) बचतों को भी प्रोत्साहन दिया जाता है जिससे चलन में मुद्रा कम होने लगती है। iii) उत्पादन की मात्रा में शीघ्रता से वृद्धि कर अतिरिक्त मुद्रा का शोषण करने का प्रयत्न किया जाता है। और iv) स्फीति अत्यधिक होने की दशा में पुरानी मुद्रा का एक बड़ा भाग निरस्त कर दिया जाता है (जैसा कि जर्मनी में किया गया था) इन सबका प्रभाव यह होता है कि चलन में मुद्रा की मात्रा कम रह जाती है। मुद्रा-अपस्फीति सदैव बिगड़ी हुई स्थिति में सुधार लाने के लिए की जाती है।

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS College, Saharsa